SALTOC Project
Title: Kalāvārtā
Imprint: Bhopāla: Madhyapradeśa Kalā Parishad
OCLC: 32108628
Issue 61, April 1988
TOC Supplied by: University of Hawai'i at Mānoa

इस अंक में

द्रोपदी–चरित्र सन्दर्भ गुरु शिष्य परम्परा	नीला भागवत	पृष्ठ ७
क्या बिदेसिया अब भी प्रासंगिक है ?	मदन कश्यप	पृष्ठ ९
कलाओं के हृदय में लोक कला जीवन की समृद्धि के दर्शन	राजीव सक्सेना	पृष्ठ १३
हुसेन होने का महत्व	विनोद भारद्वाज	पृष्ठ १६
द्वितीय द्वैवार्षिकी के कामों पर एक नजर	अखिलेश	पृष्ठ १९
रेखा को अपनी अंगुलियों से बहाते यूसुफ	ज. स्वामीनाथन	पृष्ठ २४
उर्जा आवेगों के रूप में बढ़ती तरंगों की रेखाएं	ज. स्वामीनाथन	पृष्ठ २४
जनगढ़ का रचनाक्रम	मुश्ताक	पृष्ठ २५
फूल तो चले गए	प्रिया करुणाकर	पृष्ठ २६
बारह महिला चित्रकर्मी	मंजूषा गांगुली	पृष्ठ २८
अमिताभ की खाली जगहें	विनोद भारद्वाज	पृष्ठ २९
जो मेरा संसार नहीं	के. जी. सुब्रमण्यन	पृष्ठ ३१
स्पंदन पैदा करने वाले ब्रश	प्रयाग शुक्ल	पृष्ठ ३२
अखिलेश के काम	अनीस नियाजी	पृष्ठ ३३
संकोचशील व्योम	उदयन वाजपेयी	पृष्ठ ३३
अमूर्त कला	शमशेर बहादुरसिंह	पृष्ठ ३४
परम्परा और भारतीय	जोगेन चौधरी	पृष्ठ ३५
समकालीन कला का जोखिम	विनोद भारद्वाज	पृष्ठ ३६
विजय शिन्दे के आकारहीन आकार	राकेश श्रीमाल	पृष्ठ ३८
कलाकार का सामाजिक दायित्व	असद जैदी	पृष्ठ ३८
अखिल की रेखाएं	कृष्ण खन्ना	पृष्ठ ३९
अमिताभ का संसार	अशोक साठे	पृष्ठ ३९
एक विकासशील राष्ट्र में आलोचक की भूमिका	एस. आई. क्लर्क	पृष्ठ ४०

इस अंक में अनुवादक

राजीव सभरवाल, बालकृष्ण अय्यर, सुधीर दीक्षित